भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-11, अंक: 3-4	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा : 10.00
बुधवार, 25 अप्रैल' 88	मानद सहसम्पादक: श्री महेन्द्र दवे	प्रति अंक : 1.00

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी

भागवती दीक्षा के बाद महाराज की आज्ञानुसार स्वामिश्री गुणतीतानंदस्वामी सद्. मुक्तानंदस्वामी के साथ देश में घूमते थे। सद्. मुक्तानंदस्वामी व स्वामिश्री घूमते-घूमते जेतलपुर पधारे। यहाँ पर सद्. मुक्तानंदस्वामी के पास काफी समय तक रहकर स्वामिश्री ने ध्यान का अभ्यास किया।

एक दिन छत पर बने महोल में सद्. मुक्तानंदस्वामी सोने के लिये गये। इतने में पीछे-पीछे स्वामिश्रीभी आये। सद्. मुक्तानंदस्वामी को नीचे जमीन पर बिना कुछ बिछाये सोते देख कर स्वामिश्री भी अपने सोने की तैयारी ठीक उसी प्रकार करने लगे। उन्हें ऐसा करते देख सद्. मुक्तानंदस्वामी ने उन्हें कहा–'स्वामी ! कुछ नीचे बिछा कर सोओ, नीचे कंकरों वाली जमीन है तो वह तुम्हें चुभेगी।' यह सुनकर स्वामिश्री ने उन्हें पूछा–'स्वामी ! आपने क्यों कुछ बिछाया नहीं?' तब सद्. मुक्तानंदस्वामी ने कहा–'महाराज की आज्ञा नहीं है इसलिए ! पर तुम अभी नए हो, सो धीरे-धीरे आदत डालना।' सद्. मुक्तानंदस्वामी के यह वचन सुनकर स्वामिश्री विचार में चले गये। थोड़ी देर बाद उन्होंने हाथ जोड़कर सद्. मुक्तानंदस्वामी से कहा– 'स्वामी ! महाराज की आज्ञा तो सभी के लिये है न? मैं भी कल्याण की गरज रखकर ही आया हूँ, इसलिए मुझे भी महाराज की आज्ञा पालने दो।' सद्. मुक्तानंदस्वामी तो इस नव दीक्षित साधु के त्याग की अद्भुत छटा, कल्याण की गरज व महाराज की आज्ञा पालने की दृढ़ता देखकर स्तब्ध रह गये। उन्होंने स्वामिश्री को कहा–'साधुराम ! तुम बहुत जल्दी आगे बढ़ जाओगे।'

ऐसा ही कल्याण की गरज रखकर आदर्श जीवन जीने का स्वामिश्री गुणातीतानंदस्वामी के जीवन का एक अन्य प्रसंग है–

स्वामिश्री को सद्. कृपानन्दस्वामी के मंडल में रहना अधिक जंचता था। सद्. कृपानन्दस्वामी वैसे कड़े स्वभाव के थे। एक बार एक साधु ने स्वामिश्री को पूछा कि कृपानन्दस्वामी के साथ तुम्हें कैसे जमता है? सद्. कृपानन्दस्वामी तो साधुओं की छोटी सी भी भूल होने पर उन्हें खूब डाँटते हैं।

स्वामिश्री ने उस साधु को जो जवाब दिया वह हरेक साधक और कल्याण की इच्छा रखने वाले को अपने हृदय में लिखकर रखने जैसा है.....'जब तक हम बड़ों की **टोकनी** में नहीं आते तब तक बड़ों के गुण अपने में नहीं आयेगें। गुरु जैसा कहे उसी प्रकार जो वर्तन करे, उसमें ही बड़ों का गुण आ पाता है। सद्. कृपानन्दस्वामी हमारे दोष स्पष्ट बताते हैं, इसलिये मुझे उनके साथ रहना विशेष जंचता है।'

स्वामिश्री की गुणग्राहक दृष्टि, विनम्र स्वभाव, हृदय में उतर जाये ऐसे बात करने की उनकी अनोखी रीत और महाराज की आज्ञा पालने की तीव्र निष्ठा–यह सब देखकर सद्. कृपानन्दस्वामी भी उनसे बहुत प्रभावित हुए थे। एक बार तो उन्होंने स्वामिश्री को कहा भीः 'तुम तो गुरु करने जैसे हो।' यह सुनकर स्वामिश्री एकदम संकोच से बोले–'ऐसा मेरा क्या कसूर है?' सद्. कृपानन्दस्वामी ने केवल इतना ही कहा–'इतनी सेवा करे, इतना उपदेश करे उसे तो गुरु बना ही लेना चाहिये।'

इन प्रसंगों को देखकर स्वामिश्री के त्यागपूर्ण व वैराग्ययुक्त सेवाभक्ति का सम्यक् दर्शन होता है। स्वयं अनादि ब्रह्म होते हुए भी धरती पर महाराज के साथ पधार कर अनेक मुमुक्षुओं का आत्यंतिक कल्याण करने हेतु स्वयं ऐसा जीवन जीकर एक प्रेरणारूपी मशाल सदा के लिये रख दी। **–क्रमशः**

★★★

प्रभु ! आप खेलो ! हम खिलते रहें

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयन्ती का पावन अवसर नजदीक आ रहा है। धन्य हो ! सहजानंदस्वामी को जिन्होंने ऐसे गुणातीत संतों की विरासत पृथ्वी पर अखंडित रखकर मानव जाति को हमेशा के लिये कृतज्ञ कर दिया और आज वही शुद्ध गुरुपरंपरा में प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब जैसे सूर्यसमान भेददृष्टि रहित गुणातीत साधुओं द्वारा धरती सनाथ है।

अनंत जन्मों के संस्कार जब उदय होते हैं तब ऐसे पवित्र, निर्मल, निर्मानी, निःस्वादी, निर्लोभी, निष्कामी, निष्क्रोधी संत का दर्शन होता है। हम सब कैसे भाग्यशाली ! हम सब पर कैसी कृपा ! कैसा अनुग्रह ! जो ऐसे भगवत्स्वरूप संत हमारे जीवन में सामने से गरजु बन कर आये। न कोई अपेक्षा, न ही उपेक्षा ! बिना कारण केवल सबका भला करने अविरत रूप से अनथक् परिश्रम कर रहे हैं। प्रभु रखे ऐसे भगवत्स्वरूप संत का केवल एक ही सहज स्वभाव होता है–'सुहृदभाव' एक ही भावना होती है–'मेरे संबंध में आने वाले सब सुखी हों।' इसी संकल्प से ही तो मानवस्वरूप धारण करके पृथ्वी पर आते हैं। हम सभी अपने अंतर से प्रश्न पूछे कि समस्त सम्राटों के सम्राट को हम क्या चुका सकते हैं? तब भी वह हमें सर्व प्रकार से सुखी करने लगे ही हुए हैं।

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की बातों में लिखा है कि कोटि तप, कोटि जप, कोटि व्रत, कोटि दान, कोटि यज्ञ करके भी जिस भगवान व साधु को पाना था वह आज हमें मिल गये हैं। ऐसे पवित्र साधु का संबध होने के बाद दो ही चीज करनी रहती है–उनमें अटूट विश्वास और उनके बल से उनकी मर्जी में वर्तना।

आज प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी अपने संबंध में आये हरेक को प्रभु का सच्चे अर्थ में लड़का बनाने दिल व रात देखे बिना, सर्दी व गर्मी देखे बिना, अपनी देह की परवाह किये बिना स्वयं को याहोम करके भक्ति अदा कर रहे हैं।

7 मार्च' 86 को जब प.पू. काकाजी महाराज स्वतन्त्र रूप से स्वधाम सिधारे तब दिल्ली मंडल उनके स्थूलरूप के अन्तिम दर्शन करने राजधानी से सुबह 5 बजे जब बड़ौदा स्टेशन पहुँचे, तो वहां सब धक् से रह गये जब देखा कि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी स्वयं हम सब को लेने वहां पर खड़े थे। वे समझ ही गये थे–गुरुजी खूब टूट से गये होंगे। ऐसी दुःखभरी घड़ी में उनका स्टेशन पर होना–सबको उनकी अजोड़ आत्मीयता का अद्‌भुत दर्शन करा गया–कैसी Top आत्मीयता? कैसा सेवकभाव.....!

ऐसे प्रभुस्वरूप संत का जयंती महोत्सव हम मनायें, पूजन करें, हार-फूल अर्पण करें, भेंट दें वह भक्ति है, परन्तु प्रभु की ही सुगन्ध से सुवासित माहात्म्ययुक्त भक्ति व केवल तूं ही तूं ही की भावना तथा आत्मीयता व सुरुचि सभर सरलता युक्त जीवन इनके चरणों में समर्पित कर दें वह है हमारी पराभक्ति और वही सच्ची गुरुजयंती मनाई मानी जायेगी।

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की परावाणी में हमने यह दो सूत्र कई बार सुने हैं–

'प्रभु का संबंध होने के बाद केवल बुद्धि से ही देखना या विचारना वह पाप है।

'प्रभु के निर्मल संत के साथ अटूट संबंध व दृढ़ निष्ठा।'

यह दो सूत्र अपने जीवन का अब आधार बने।

अन्त में इस महामंगलकारी दिन पर गुणातीत स्वरूपों के चरणों में एक ही प्रार्थना–आपके साथ हुए अमूल्य संबंध को हम संभाले, अंतरायरहित का एक संबंध हो जाये। विपरीत संजोगों में भी आपके प्रति मनुष्यभाव न आये। हमारी प्रीति में भावफेर न हो। अपनी जड़ बुद्धि व 51 भूतों के दास न होकर केवल आपकी ओर निगाह रखकर आपकी मर्जी में बर्तें। न वर्ता जा सके तो अंतर्दृष्टि करके अन्तर से दोष टालने के लिए रो-रोकर गद्‌गद् कंठ से प्रार्थना करें–ऐसी बुद्धि आप खूब कृपा करके देना।

★ ★

Statement about Ownership and other particulars about newspaper

'भगवत-कृपा'— 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, A-103, Ashok Vihar, Ph-III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sadhu Mukundjivandas
Nationality	:	Indian
Address	:	Yogi Divine Society, A-103, Ashok Vihar, Ph-III, Delhi-52
4. Publisher's Name		
Nationality	:	As above
Address		
5. Editor's Name		
Nationality	:	As above
Address		
6. Owner' Name		
Nationality	:	As above
Address		

I, Sadhu Mukundjivandas, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/- **Sadhu Mukundjivandas**

Date: 25th March, 1988

Signature of Publisher

ब्रह्मप्रवाह

कोई पू. बापा का मूल रहस्य व अभिप्राय नहीं समझता हो तो भले–हमें तो पू. बापा की ओर ही निगाह रखकर गुणगान गाते रहना है..... पू. बापा= निर्दोषबुद्धि=गुणगान ही गाने व सुनने व प्रत्यक्ष मूर्ति की महिमा समझ कर आनंद में रहना.....

तो हमें सत् वस्तु–सनातन वस्तु-यानि केवल महिमा-पू. बापा की-प्रगट स्वरूप की गाथा ही करनी है व संबंध वालों को दिव्य मान कर सेवा करा करनी है। उससे श्रीजी महाराज को हाजिर ही रहना पड़ेयह सौ टका खात्री से कहता हूँ।

पू. बापा कहते हैं–जहाँ तत्त्व से सच्ची पहचान करके भजन होता हो वहां ही हम रहते हैं। कोई स्थान, तीर्थ या मंदिर में नहीं, पर एकांतिक भक्त के हृदय में रहते हैं। इसलिये हम सभी को–केवल पू. बाप को ही रखकर महिमा–उसकी गाया करने का ही धंधा करना है.....

.....गुरुमुखी बनकर जो प्रेरणा हो वैसा करना और अगर न सूझे तो पू. भाई (पू. पप्पाजी) और मैं–जैसा कहें वैसा करना तो भी माया नड़ेगी ही नहीं। पू. बापा की मर्जी होगी वैसा ही होता जायेगा, इसलिये अखंड आनंद ही रहेगा। ऐसा हमारा अनुभव है। सो बलभरी बातें करनी व सुननी। मिला है कौन? कैसा? कहाँ? फिर क्या डर?? सो निर्मानीरूप से अंर्तदृष्टि करते-करते पुकार करना, तो वे ही (बापा ही) जवाब देंगे। फिर वैसा हमें वर्तना।

17 अगस्त, 1969

प.पू. काकाजी महाराज

❋

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	2.4.88	बुधवार	ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि।
2.	दि.	25.4.88	सोमवार	नवमी, श्री हरिजयंती
3.	दि.	27.4.88	बुधवार	एकादशी, व्रत
4.	दि.	1.5.88	रविवार	पूर्णिमा, श्री अक्षरजयंती, **अशोकविहार मंदिर में प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामी महाराज की जयंती मनायेंगे, प्रातः 9 बजे से 12 बजे तक**
5.	दि.	12.5.88	गुरुवार	एकादशी, व्रत
6.	दि.	13.5.88	शुक्रवार	ब्र.स्व. गुरुहरि योगीजी महाराज की जयंती

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110032